धरोहर

भाग- 6

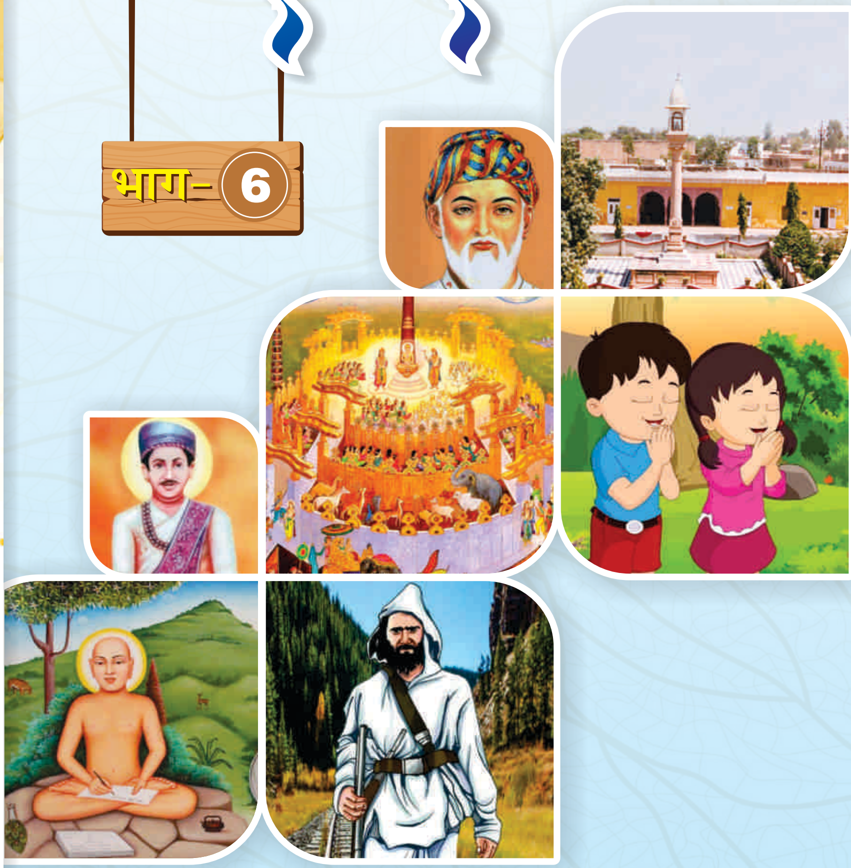

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

समर्पण

स्कूल जाते समय रखें सावधानियाँ

1. पानी की बोतल में ताजा पानी छानकर भरें और बोतल में लोंग या थोड़ी सी सौंफ डाल लें, जिससे आपका पानी 6 घंटे तक अनछना नहीं होगा।
2. स्कूल में अपने टिफिन का ही भोजन करें, हर किसी अपरिचित का भोजन न करें। हो सकता है कि उसके टिफिन में न खाने योग्य अभक्ष्य-अमर्यादित पदार्थ हों।
3. आप अच्छे और संस्कारित बच्चों को दोस्त बनायें जिससे आपकी सोच का और आपका विकास होगा।
4. स्कूल के गार्डन में अथवा रास्ते में लगे हुए पौधों अथवा फूलों को नुकसान न पहुँचायें, न ही उन्हें तोड़ें। यह हिंसा का पाप है।
5. स्कूल की किसी भी चीज को अपने अध्यापक से बिना पूछे न लायें और न ही किसी छात्र की कोई वस्तु को लायें।
6. विद्यालय में मन लगाकर पढ़ें। अध्यापक की प्रत्येक बात को ध्यान से सुनें।
7. विद्यालय से लौटकर अपने कपड़े, जूते-मोजे, टाई, आई कॉर्ड, स्कूल बैग सही स्थान पर रखें।
8. मोजे जूते से बाहर रखें। जूते के अंदर रखने से उनमें बदबू आने लगती है।
9. अपना होमवर्क उसी दिन पूरा करने का प्रयास करें ताकि स्कूल में मिलने वाले दण्ड से आप बच सकें।
10. अपनी पढ़ाई के बारे में तथा स्कूल में कोई भी खास बात हुई हो या कोई घटना हुई हो तो अपनी मम्मी को अवश्य बतायें।

सर्वोदय ग्रन्थमाला पुष्प-2

धरोहर

भाग-6

(गौरवशाली नैतिक-अहिंसक मानव मूल्यों, पर्वों, तीर्थों तथा इतिहास की बोधक)

संकलन/संपादन

राजकुमार शास्त्री, उदयपुर

प्रकाशक

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ
[चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रम संवत् 2080 (नववर्ष प्रारंभ)
22 मार्च 2023]

प्राप्ति स्थान : 18, आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर,
यूनिवर्सिटी रोड, उदयपुर (राज.)
मो. 91-9414103492

मूल्य : 75/-

प्यारे बच्चो! अच्छी पुस्तकें ज्ञान प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन हैं, सच्ची मित्र हैं। पुस्तकों से गुण-दोष, अच्छे-बुरे का ज्ञान होता है, जिससे शान्तिमय जीवन का निर्माण होता है इसलिए पुस्तकों को खराब न करें, फाड़ें नहीं, अपमान न करें।

मुद्रक : देशना कम्प्यूटर्स
82, पॉल्टी फार्म, आगरा रोड, जयपुर
मो. 9928517346

पुस्तक के संबंध में...

वर्तमान समय में भौतिक संसाधनों की वृद्धि आश्चर्यजनक रूप से हो रही है, साथ ही शिक्षा-चिकित्सा-व्यवसाय इत्यादि क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय प्रगति हो रही है, जिससे सर्वत्र आर्थिक समृद्धि भी दिखाई दे रही है; फिर भी यदि गम्भीरता से देखा जाए तो जहाँ शिक्षा और अर्थ जगत में उत्साहवर्धक उन्नति हुई है वहीं मानवीय मूल्यों और नैतिकता में बहुत ही ह्रास हो रहा है। हम अपनी संस्कृति को भुलाते जा रहे हैं। विद्यार्थी कैसे भी अधिक से अधिक अंक प्राप्त करके, अच्छे पैकेज वाला 'जॉब' करके कैसे भी धन अर्जित कर उसे भोग विलास में लगाकर अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव कर रहे हैं।

हमारे देश की संस्कृति या विरासत अन्य-अन्य माध्यमों से छात्रों तक पहुँचाई जाती रही है फिर भी अनेक व्यक्तित्व, पर्व ऐसे हैं जिनके बारे में भारत देश की अधिकांश जनसंख्या अपरिचित है, ऐसे अनेक प्रेरक प्रसंग हैं, जो हमारे लिए दिशा बोध देते हैं इन सभी का ज्ञान कराने की भावना से हमने यह 'धरोहर' पुस्तक तैयार की है।

अध्यापकों से निवेदन है कि विश्व गुरु के रूप में प्रसिद्ध महान् भारत देश की नैतिक, अहिंसक, संस्कृति एवं गौरवशाली इतिहास की झलक दिखलाने वाली इस पुस्तक का उत्साहपूर्वक अध्यापन कर अपनी 'धरोहर' को बच्चों तक पहुँचाने में अपना सहयोग करें।

छात्रों से भी अनुरोध है कि जिन विषयों के अंक, अंक सूची में अंकित होते हैं, जिनके आधार से नौकरी मिलती है वे ही विषय काम के हैं – ऐसा विचार त्याग कर 'जो हमारे विचार और आचरण को प्रभावित करे, जो हमारे जीवन का निर्माण करे' – ऐसी पुस्तक को भी अपने जीवन में उत्साह पूर्वक अवश्य ही पढ़ना चाहिए।

सुभाषितकार ने कहा है –

राष्ट्रं समाजतः सिद्ध्येत्, समाजो व्यक्तिभिस्तथा।
व्यक्तिश्चरित्रतः सिद्ध्येत्, चरित्रं तूच्चशिक्षया।।

राष्ट्र का निर्माण समाज से होता है, समाज का निर्माण व्यक्तियों से होता है, व्यक्ति का निर्माण चरित्र से होता है और चरित्र का निर्माण उच्च और श्रेष्ठ शिक्षा से होता है।

बालकों के चरित्र निर्माण की दिशा में यह पुस्तक एक छोटा-सा कदम है जो सही दिशा की ओर ले जाएगा। आपके जीवन को उत्साह व प्रसन्नता से परिपूर्ण करने के लिए यह पुस्तक आपके हाथों में है।

जिन लेखकों/कवियों की सामग्री पुस्तक में सम्मिलित की गई है उन सभी के प्रति हम आभारी हैं।

आशा है विद्यालय संचालकों/अध्यापकों और छात्रों के उत्साह/सहयोग से हमारा यह प्रयास सार्थक होगा।

डॉ. अरविन्द जैन
संयोजक

राजकुमार शास्त्री
संपादक

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृ.सं.
1.	प्रार्थना	7
2.	प्रेरक प्रसंग	9
	■ दीर्घ जीवन का राज	9
	■ संयम	10
	■ तन्दुरस्ती का रहस्य	10
	■ वीर बालिका चम्पा	11
	■ परोपकार	13
3.	हमारे गौरवशाली महापुरुष	15
	■ धन्य हैं दीवान टोडरमलजी	15
	■ पण्डित बनारसीदास	16
4.	जरा याद इन्हें भी कर लो	19
	■ टंट्या भील	19
	■ श्रीमती अंगूरीदेवी जैन	21
5.	एकांकी : अध्यक्ष	24
6.	हमारे पर्व	27
	■ अक्षय तृतीया	27
	■ वीर शासन जयंती	27
7.	हमारे तीर्थ : मथुरा	29
8.	कविताएँ	31
	■ दिल में उमंग हो	31
	■ दादाजी की सीख	32
	■ चींटी से सीख	32
	■ सीख	33
9.	सदाचार	35
	■ अब नहीं छोड़ूँगा	35
	■ ईमानदारी	37
	■ कहीं देर न हो जाये	38
10.	जीवन निहारें–जीवन निखारें	42
	■ हमारे विचार–सुखी जीवन का आधार	42
11.	शिक्षाप्रद कहानियाँ	48
	■ विनय का फल : कौण्डेश बने कुन्दकुन्द	48
	■ अहिंसा परमो धर्मः	51
12.	सुभाषित – दया	55

निरपेक्ष

फूल मिले या शूल मिले।
मान मिले अपमान मिले।
तू ना हटना पर से डरकर।।

साथ देने न हाथ बढ़ाते।
गिरते को सब और गिराते।
रहना इनसे तू नित बचकर।।

यश पाने की ना हो आशा।
असफलता में नहीं निराशा।
करते रहना उद्यम डटकर।।

नदियाँ बहतीं, वृक्ष हैं फलते।
रवि-शशि भी हैं नभ में उगते।।
स्वार्थ नहीं कुछ, बस पर हितकर।।

स्वोदर तो हैं श्वान भी भरते।
मनुज वही जो परहित करते।।
निज हित हेतु ही परहित कर।।

परहित तो हो मात्र बहाना।
बुरे भाव से खुद को बचाना।।
परहित संग तू निजहित भी कर।।

सत्यपंथ पर जो हैं चलते।
पथ में यश-पद सुमन हैं खिलते।।
विचलित न हो यश-पद लखकर।।

1 प्रार्थना

हे प्रभु! इस विश्व में सुख शान्ति का आवास हो।
न रोग हो, न शोक हो, न भूख हो न प्यास हो।। 1।।
मृत्यु का अब हो न तांडव, सर्वत्र ही मधुमास हो।
माता-पिता गमगीन न हों, न युगल कोई उदास हो।। 2।।
ज्ञान मन्दिर सब खुलें, हो ज्ञान की आराधना।
बाल-बाला मुदित मन से, करें लक्ष्य की साधना।। 3।।
सिर झुके न स्वजन सम्मुख, पुलकित वदन सब रह सकें।
'चिंता करो न कोई अब, हम साथ हैं' सब कह सकें।।4।।
मित्रगण औ परिजन-पुरजन, फिर गले से लग सकें।
हाथ में ले हाथ प्रिय का, साथ में सब चल सकें।। 5।।
खेत में हरियाली चादर, कृषक में उल्लास हो।
बाजार में हो चहलकदमी, धनधान्य की बरसात हो।।6।।
दूरियाँ अब दूर हों प्रभु! मनुज मन नजदीक हों।
समता-समर्पण-समन्वय से, देवत्व के ही प्रतीक हों।।7।।
भय भगे उत्साह जागे, नवसृजन में सब लगें।
जो हुआ सो हुआ हे प्रभु! अब कष्ट सबके सब भगें।।8।।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – सही जोड़ी बनाओ –

1.	हम	क.	समर्पण
2.	परिजन	ख.	साथ हैं
3.	विश्व	ग.	उत्साह जागे
4.	समता	घ.	पुरजन
5.	भय भगे	ङ.	सुख शान्ति

प्रश्न 2 – रिक्त स्थान भरिए –

1. हमें .... की साधना करनी चाहिए।
2. अब हमारे पास .... का तांडव नहीं होना चाहिए।
3. खेत में .... की चादर होनी चाहिए।
4. .... मंदिर सब खुल जायें ज्ञान की आराधना के लिए।

प्रश्न 3 – निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. किसकी आराधना की बात प्रार्थना में की गई है?
2. किस-किसके गले से लगने की बात की गई है?
3. देवत्व के प्रतीक किसको कहा है?
4. विश्व में किसके आवास होने की कामना की गई है?

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

आपको पता है हम सबसे पहले भगवान का स्मरण क्यों करते हैं? इसके कारणों एवं लाभों पर विचार कीजिए।

2 प्रेरक प्रसंग

दीर्घ जीवन का राज

एक बार सुविख्यात दार्शनिक कन्फ्यूशियस से मिलने एक सज्जन आये। वह उनसे इधर-उधर की बात करते रहे। उन्होंने बहुत से प्रश्न पूछे और कन्फ्यूशियस ने उनके उत्तर दिये।

अन्त में उन सज्जन ने पूछा, ''यह बताइये कि दीर्घजीवी कौन होता है?''

कन्फ्यूशियस इस प्रश्न पर मुस्कराये। बोले, ''जरा उठकर मेरे पास आइये।''

वह आये तो कन्फ्यूशियस ने कहा, ''मेरे मुँह में देखिये, जीभ है या नहीं?''

कन्फ्यूशियस ने मुँह खोल दिया। उन सज्जन ने झुककर मुँह के अन्दर देखा और बोले, ''जी हाँ, जीभ है।''

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''अच्छा, अब देखिये कि दाँत हैं या नहीं?''

उन भाई ने फिर झुककर कन्फ्यूशियस के मुँह के अन्दर देखा और बोले, ''दाँत तो एक भी नहीं है।''

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''अरे, यह क्या हुआ? जीभ तो दाँतों से पहले पैदा हुई थी। उसे दाँतों से पहले आना चाहिए था। क्या आप बता सकेंगे कि ऐसा कैसे हुआ?''

वह महानुभाव बड़ी हैरानी में पड़े। उन्हें सूझा ही नहीं कि क्या जवाब दें। थोड़ा रुककर उन्होंने कहा, ''मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं है। आप ही बताइये।''

कन्फ्यूशियस बोले, ''इसका कारण यह है कि जीभ कोमल है, दाँत कठोर हैं। जिसमें लचीलापन होता है, वह अधिक समय तक जीता है।''

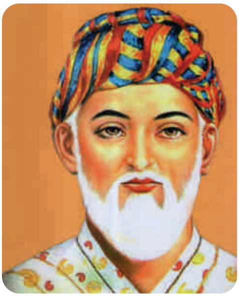

संयम

प्रसिद्ध कवि अब्दुर्रहीम खान खाना के पास एक व्यक्ति आया और उनसे पूछा कि जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण कौनसा संयम है, उन्होंने दोहा के माध्यम से उत्तर दिया –

रहिमन जिव्हा बावरी, कह गई सुरग पाताल।
खुद कह भीतर घुस गई, जूती पड़े कपाल।।

अर्थात् सारे संयमों में वाणी का संयम बहुत महत्त्वपूर्ण है। जीभ खुद तो बात कहकर मुँह के अन्दर चली जाती है, परन्तु उसका परिणाम कहने वाले को भुगतना पड़ता है।

तन्दुरस्ती का रहस्य

एक बादशाह था। वह बड़ा ही नेक और मेहरबान था। उसकी एक साधु के प्रति बड़ी भक्ति थी। वह साधु किसी दूसरे नगर में रहता था। वहाँ कोई अच्छा इलाज करने वाला नहीं था। एक दिन बादशाह ने सोचा कि अगर उन साधु के आश्रम में कोई बीमार पड़ जाये तो बड़ी हैरानी होगी। इसलिए उसने अपने हकीम से कहा कि तुम उस नगर में जाओ और साधु का कोई चेला बीमार पड़ जाये तो उसकी सेवा करो।

हकीम उस शहर में पहुँच गया। लेकिन एक दिन बीता, दो दिन बीते, दस दिन बीते, एक भी आदमी उसके पास इलाज के लिए नहीं आया।

हकीम खाली बैठा-बैठा परेशान हो गया। वह घर से इतनी दूर लोगों की सेवा करने आया था, लेकिन वहाँ कोई उसकी सेवा लेने वाला ही नहीं था। पर उसने धीरज नहीं छोड़ा।

राह देखते-देखते जब कई महीने निकल गये तो तंग आकर वह साधु के पास गया और कहा, ''महाराज, मुझे बादशाह ने आपके चेलों का इलाज करने भेजा है, लेकिन एक भी आदमी मेरे पास नहीं फटका। आखिर माजरा क्या है?''

साधु मुस्कराया और बोला, ''हकीमजी, आप मेरे चेलों को जानते नहीं। उनकी आदत है कि जब तक उन्हें जोर की भूख नहीं लगती, वे खाना नहीं खाते, और जब खाते हैं, तब थोड़ी भूख रहते ही खाना छोड़ देते हैं।''

हकीम ने समझ लिया कि ऐसी जगह रोग नहीं आ सकता। उसने अपना बिस्तार बाँधा और चला आया।

वीर बालिका चम्पा

बड़े-बड़े राजपूत राजाओं ने अकबर के सामने अपनी हार मान ली थी और उनकी अधीनता स्वीकार कर ली थी, परन्तु महाराणा प्रताप ही ऐसे थे जो अकबर के आगे नहीं झुके। उन्होंने बहुत कष्ट उठाये परन्तु कभी हिम्मत नहीं हारी। अकबर की सेना ने उनके नगर चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया था। महाराणा प्रताप अरावली की पहाड़ियों और जंगलों में अपने परिवार के साथ भटकते फिर रहे थे। दिन भर पैदल घूमना, चट्टान पर सोना, कई

बार उपवास करना उनका जीवन बन गया था। कई बार उन्हें बेर और घास की रोटियाँ खाना पड़ती थीं। ऐसे संघर्ष उन्होंने कई वर्ष तक किये।

महाराणा प्रताप की बेटी चम्पा ग्यारह वर्ष की और बेटा चार वर्ष का। एक दिन दोनों नदी के पास खेल रहे थे, तभी कुमार को भूख लगी और वह रोने लगा। चम्पा ने अपने भाई को कहानी सुनाकर बहला दिया। वह भूखा ही सो गया। चम्पा जब अपने भाई को सुलाकर आई तो अपने पिता महाराजा को चिन्तित देखकर उसका कारण पूछा तो महाराणा ने बताया कि ''बेटी! हमारे यहाँ एक अतिथि आये हैं और मेरे पास उन्हें खिलाने के लिए कुछ नहीं है।''

चम्पा ने कहा – ''पिताजी! आप चिन्ता न करें। आपने जो कल मुझे दो रोटी दी थीं उनमें से एक रोटी रखी है। वह आप अतिथि को दे दीजिए।''

कई दिनों से पूरा भोजन न मिलने से बच्चे बहुत कमजोर हो गये थे, चम्पा अचानक बेहोश होकर गिर पड़ी। महाराणा को अपने बच्चों को भूखा देखकर, अपनी परिस्थिति सहन नहीं हुई और उन्होंने उसी दिन बादशाह अकबर को उनकी आधीनता स्वीकार करने के लिए पत्र लिखा।

चम्पा के होश में आते ही महाराणा ने उसे बताया कि ''बेटी! अब तुम्हें और अधिक दुःख नहीं भोगना पड़ेंगे। मैंने अकबर की अधीनता स्वीकार करने का निर्णय किया है।''

चम्पा जोर से बोली – ''पिताजी! ये आप क्या कर रहे हैं हमें बचाने के लिए क्या आप गुलामी स्वीकार करेंगे? हमें कभी न कभी तो मरना ही है। पिताजी देश के लोगों का अपमान मत कीजिए। आपको मेरी

सौगंध है।'' ऐसा बोलते–बोलते चम्पा के प्राण निकल गये। यह देखकर महाराणा ने फिर संघर्ष करने का साहस किया और अपने लोगों को एकत्रित कर अपना राज्य वापस लिया। ऐसी थी चम्पा की देशभक्ति।

परोपकार

संस्कृत के महाकवि माघ अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध थे। उन दिनों उनकी आर्थिक स्थिति खराब चल रही थी फिर भी उदारता के भाव पहले जैसे ही थे। एक रात उनके घर पर एक व्यक्ति आया और उनसे बोला – ''मुझे अपनी बेटी का विवाह करना है और मेरे पास कुछ भी नहीं है। आपकी दानवीरता सुनकर बहुत आशा के साथ आपके पास आया हूँ। आप कुछ सहायता कर दें तो मेरा काम हो जायेगा।''

कवि माघ का हृदय करुणा से भर गया, परन्तु उनके पास उस समय देने के लिए कुछ नहीं था। तभी उन्होंने अपनी सोती हुई पत्नी के हाथ में सोने के कंगन देखे। उन्होंने धीरे–धीरे एक हाथ का कंगन उतार कर उस व्यक्ति को दिया और बोले – ''मैं इस समय मजबूर हूँ। इस समय मैं इतनी ही सहायता कर सकता हूँ। इसे स्वीकार कीजिए।''

तभी पत्नी की आँख खुली और वह सारी स्थिति समझ गई। उसने अपना दूसरा कंगन उतार कर माघ को दिया और मुस्कराहट के साथ बोली – ''भला विवाह जैसे कार्य में एक कंगन से कैसे कार्य होगा? यह दूसरा कंगन भी आप इन्हें प्रदान करें।'' माघ पत्नी के इस कार्य से अत्यन्त प्रसन्न हो गये।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – सही जोड़ी बनाइये –

1.	सज्जन	क.	बाहर
2.	दीर्घजीवी	ख.	कठोर
3.	कोमल	ग.	अल्पजीवी
4.	अन्दर	घ.	दुर्जन

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति करो –

1. पहले .... पैदा होती है।
2. माघ .... भाषा के कवि थे।
3. चम्पा के पास .... रोटियाँ थीं।
4. जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण .... संयम है।

प्रश्न 3 – लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर –

1. दाँत जीभ से पहले क्यों टूट जाते हैं?
2. जीभ की विशेषता कहानी में क्या बताई है?
3. हकीम के पास कोई रोगी क्यों नहीं आया?
4. महाराणा प्रताप कहाँ रह रहे थे?
5. माघ के पास एक व्यक्ति क्यों आया था?

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

आपको भी यदि चम्पा की तरह संघर्ष करना पड़े तो कैसे करेंगे।

3 हमारे गौरवशाली महापुरुष

धन्य हैं दीवान टोडरमलजी

अनेक जैन महापुरुषों ने आत्मकल्याण और धर्म सेवा तो की है, परन्तु सामाजिक दायित्वों के निर्वाह करने में भी वे अग्रणी रहे हैं। उनमें एक थे दीवान टोडरमलजी।

पंजाब के पटियाला जिले का एक नगर है फतेहगढ़ साहिब। यह नगर सिक्खों के श्रद्धा और विश्वास का केन्द्र है। यहाँ अनेक गुरुद्वारे होने के कारण इसे गुरुद्वारों का नगर भी कहा जाता है।

लगभग 300 वर्ष पहले सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह के दो बेटों को सरहिन्द के तत्कालीन फौजदार वजीर खान ने जीवित ही दीवार में चुनवा दिया था अर्थात् ऐसी सजा जिसमें जीवित व्यक्ति को दीवार से बाँध दिया जाता था अर्थात् ऐसी सजा जिसमें जीवित व्यक्ति को दीवार से बाँध दिया जाता था और उसके सामने दीवार खड़ी करवा दी जाती थी। कुछ समय में वह व्यक्ति साँस रुकने से तड़प-तड़प कर मर जाता था। दोनों बेटों की मृत्यु के बाद उनकी दादी माँ का भी निधन हो गया।

तब वहाँ का नवाब इन तीनों के शरीर का अंतिम संस्कार करने के लिए जगह नहीं दे रहा था। उसने एक शर्त रखी थी कि अंतिम संस्कार के लिए जितनी जगह चाहिए उतने हिस्से में स्वर्ण मुद्राएँ बिछा दी जायें। यह

सुनकर टोडरमलजी ने इसे अपना सामाजिक दायित्व समझा और अंतिम संस्कार जगह के बराबर स्वर्ण मुद्राएँ बिछा दीं। यह देखकर नवाब का लोभ बढ़ गया और बोला – "जितनी जगह ऊपर की ओर चाहिए उतनी स्वर्ण मुद्राएँ ऊपर की ओर भी खड़ी करके बिछाओ।" टोडरमलजी ने उसकी बात मान ली और उतनी स्वर्ण मुद्राएँ देकर भूमि ली और विधिवत् अंतिम संस्कार किया। बाद में फतेहगढ़ साहिब में उसी स्थान पर गुरुद्वारा श्री ज्योति स्वरूप बनाया गया। टोडरमलजी के योगदान के कारण बेसमेन्ट का नाम दीवान टोडरमलजी जैन हॉल रखा गया है।

समीप में चंडीगढ़ रोड पर जैन मंदिर है। इस मंदिर में टोडरमलजी के दो चित्र लगे हुए हैं, जिसमें इस घटना का उल्लेख किया गया है।

गुरुद्वारे के एक हॉल का नाम 'जैन' के नाम पर

दिल्ली के राजौरी गार्डन गुरुद्वारे के दो बड़े हॉल का नवीनीकरण किया गया है। दोनों हाल 2000 व्यक्तियों की क्षमता वाले बड़े हॉल हैं और एयरकंडीशन भी हैं। एक हाल सिख समाज में शादी इत्यादि सामाजिक समारोह के आयोजन के लिए है और एक हॉल गुरुद्वारे में आने वाली संगत के लंगर के लिए है। सिख समाज ने अपने इस नवनिर्मित आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण हॉल का नाम 'दीवान टोडरमल जैन हॉल' रखा है।

सिख समाज का यह कृतज्ञ भाव अनुकरणीय है।

पण्डित बनारसीदास

पण्डित बनारसीदासजी हिंदी भाषा के प्रतिभाशाली कवि थे। आपके पिता का नाम खरगसेन था व 1586 में पण्डित बनारसीदासजी का जन्म श्रीमालवंश में हुआ था। जन्म के समय आपके पिता ने आपका नाम विक्रमाजीत रखा था, किंतु बाद में आपका नाम बनारसीदास रख दिया गया।

हिंदी भाषा की सर्वप्रथम आत्मकथा सन् 1641 में पण्डित बनारसीदासजी ने लिखी थी, जिसका नाम है 'अर्द्धकथानक' इसमें कवि ने अपने जीवन के 55 वर्ष का जीवन वृतांत ब्रजभाषा एवं पद्यशैली में लिखा है। पण्डित बनारसीदासजी, अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में हुए जिसके कारण से अर्द्धकथानक तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक परिस्थिति के ज्ञान का भी स्रोत है। बनारसीदासजी अपने पिता के एकमात्र पुत्र थे इसलिए उनका पालन-पोषण बड़े प्यार सहित हुआ जब वे 7 वर्ष के हुए तब उनका विद्याध्ययन प्रारंभ हुआ। उस समय वहाँ पांडे रूपचन्दजी नामक एक विद्वान रहते थे। इन्हीं के पास बनारसीदासजी ने पढ़ना प्रारंभ किया 10 वर्ष की आयु में आपका विवाह हो गया था, विवाह के कुछ समय बाद तक आपका अध्ययन बंद रहा, लेकिन 14 वर्ष की आयु में आपने पुनः अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया।

युवा अवस्था में आपने जैनदर्शन के सिद्धांतों का जब ज्ञान किया तब उससे प्रेरित हो अपनी श्रृंगार रस युक्त 'नवरस' कृति को गोमती नदी में बहा दिया। व्यापार आदि के क्षेत्र में उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, किंतु 6 वर्ष के कठिन परिश्रम के बाद आपका व्यापार चल पड़ा और आर्थिक रूप से आप सुदृढ़ हुए।

आपके तीन विवाह और नौ बालक हुए, किंतु नौ बालकों में से कोई भी जीवित न रहा। इस तरह आपका पारिवारिक जीवन भी अत्यंत ही कष्टदायक रहा। आपकी मृत्यु विक्रम सम्वत् 1700 में हुई थी किन्तु तिथि के संदर्भ में निर्णीत जानकारी अनुपलब्ध है।

आपकी नाटक समयसार, बनारसी विलास नाममाला एवं अर्द्धकथानक पद्य और निमित्त-उपादान चिट्ठी तथा परमार्थ-वचनिका दो गद्य कृतियाँ हैं। साथ ही साथ 'मोह विवेक युद्ध' भी आपकी ही कृति है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – सही जोड़ी बनाइये –

1.	पिता	क.	9 बालक
2.	तीन विवाह	ख.	गोमती नदी
3.	निमित्त-उपादान चिट्ठी	ग.	खरगसेन
4.	आत्मकथा	घ.	परमार्थवचनिका
5.	नवरस	ङ.	ब्रजभाषा – पद्य शैली

प्रश्न 2 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. नवाब ने अंतिम संस्कार के लिए क्या शर्त रखी थी?
2. अर्द्धकथानक में कितने वर्ष का वृतान्त है?
3. बनारसीदासजी के विद्यागुरु कौन थे?
4. सेठ अमरचन्दजी की अन्तिम इच्छा क्या थी?

प्रश्न 3 – उल्टा – पुल्टा

नोट – दिए गए शब्दों में गोले लगाकर शब्द बनाएँ, शब्द इसी पाठ के होने चाहिए।

श्र	द्धा	ज	लि	बी	प	र
नी	म	क्रां	ति	का	रि	यो
रा	ज	घ	रा	ने	श्र	ग
ज	न	न	ज	र	म	दा
द्रो	ता	व	को	आ	ज	न
ही	व	का	ष	या	बू	न
अ	म	र	चं	द	त	ग
मो	ह	दि	न	व	का	र

प्रश्न 4 – पूछो और बताओ –

सेठ अमरचन्दजी जैसे अन्य भी क्रांतिकारी और सहयोगी हुए हैं, इनके नाम और कार्यों की जानकारी एकत्र करें।

4 जरा याद इन्हें भी कर लो...

टंट्या भील

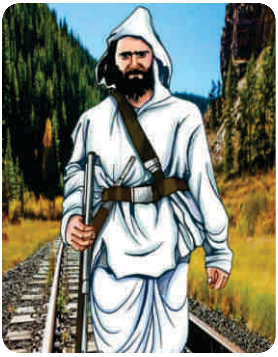

टंट्या भील का वास्तविक नाम तांतिया भील था। लोग प्यार से उन्हें तंट्या मामा भी कहते थे। टंट्या भील ने अंग्रेजों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों के विरुद्ध 12 वर्षों तक संघर्ष किया। स्थानीय लोग उन्हें जन नायक मानते हैं वहीं अंग्रेजी हुकूमत अन्य क्रांतिकारियों की तरह उन्हें एक विद्रोही और लुटेरा मानती थी। वे अंग्रेजी हुकूमत के सरकारी खजाने लूटते थे और लूटे हुए सामान को जरूरतमंदों और गरीबों में बाँट देते थे। टंट्या भील ने अंग्रेजों के खिलाफ जीवन भर संघर्ष किया। टंट्या भील से संबंधित कई दन्त-कथायें आज भी कही- सुनी जाती हैं। उन्होंने अपने दौर में गरीब और शोषित आदिवासियों के मन में अंग्रेजी शासन के खिलाफ ज्योत जलाई।

टंट्या भील का जन्म और बचपन -

टंट्या भील का जन्म खण्डवा जिला जिसे पूर्वी निमाड़ भी कहा जाता है की पंधाना तहसील के बड़दा गाँव में 1842 में भील आदिवासी परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम भाऊ सिंह भील था। टंट्या शब्द का शाब्दिक अर्थ झगड़ालू होता है। अन्य भील बच्चों की तरह टंट्या बचपन से ही धनुष-बाण चलाना सीख गए थे। उनका बचपन जंगल और गाँव में ही बीता। टंट्या भील दुबले-पतले और साधारण कद काठी के इंसान थे। जब वह युवा हुए तो उनकी नेतृत्व क्षमता उभरकर सामने आने लगी उन्होंने लोगों को संगठित किया और आदिवासियों के अद्वितीय नायक के रूप में सामने आये।

टंट्या भील का विद्रोही बनना –

टंट्या भील 1857 की क्रांति और क्रांति के नायकों से बहुत अधिक प्रभावित थे। 1857 के बाद आम जनता पर अंग्रेजों के अत्याचार बहुत अधिक बढ़ गए। टंट्या का परिवार और आम आदिवासी भी इससे अछूते नहीं थे। अंग्रेजों के अत्याचारों से तंग आकर टंट्या भील ने संघर्ष का रास्ता चुना। संघर्ष के इस पथ पर स्थानीय लोगों ने भी उनका साथ दिया। 1874 में पहली बार उन्हें चोरी के मामले में गिरफ्तार किया गया था। 1878 में उन्हें फिर से गिरफ्तार किया गया। इसके बाद टंट्या ने बड़े स्तर पर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष शुरू कर दिया। उन्होंने जंगल में रहकर गुरिल्ला युद्ध नीति अपनाई इससे अंग्रेजों को बहुत अधिक नुकसान हो रहा था वे लगातार टंट्या भील को पकड़ने का प्रयास कर रहे थे परन्तु टंट्या उनके हाँथ नहीं आये।

टंट्या भील की मृत्यु –

टंट्या भील को उनके ही रिश्तेदार के विश्वासघात के कारण पकड़ लिया गया। उन्हें पकड़ कर इंदौर लाया गया। इंदौर में उन्हें सेंट्रल इंडिया एजेंसी जेल में रखा गया; परन्तु यहाँ लोगों के विरोध देखते हुए उन्हें कड़ी सुरक्षा में जबलपुर लाया गया। यहाँ उन्हें बहुत प्रताड़ित किया गया। 19 अक्टूबर 1889 को उन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई और 4 दिसंबर 1889 को उन्हें फाँसी दे दी गई। अंग्रेजी हुकूमत को डर था की कहीं भील विद्रोह न भड़क जाए। कहा जाता है कि इसी डर के कारण उनके शव को इंदौर के पातालपानी रेल्वे स्टेशन (वर्तमान में इसका नाम टंट्या मामा स्टेशन है) के पास फेंक दिया गया था। वर्तमान में उसी स्थान के पास उनकी समाधि है।

टंट्या भील के उपनाम –

टंट्या भील का वास्तविक नाम तांतिया भील था। आम लोग उनसे इतना अपनापन महसूस करते थे कि प्यार से उन्हें मामा कहते थे धीरे-धीरे

यह शब्द भील समुदाय के लिए भी प्रचलित हो गया। टंट्या भील की गिरफ्तारी के बाद न्यूयार्क टाइम्स ने उन्हें 10 नवम्बर के अंक में 'भारत का रॉबिनहुड' कहा। भील समुदाय देवता तुल्य टंट्या भील मानकर उनकी पूजा करता है।

श्रीमती अंगूरीदेवी जैन

'देशहित तैयार हैं, गरदन कटाने के लिए' का आह्वान करने वाली तथा आजादी के लिए अपना सारा सुख-चैन त्यागने वाली श्रीमती अंगूरी देवीजी का जन्म 19 जनवरी 1910 को कासगंज में श्री होतीलालजी जैन के यहाँ हुआ। आपकी शिक्षा कक्षा पाँचवीं तक ही हुई।

22 मई सन् 1922 में आगरा के महान देशभक्त, जैन साहित्योद्धारक, संस्कृतिकर्मी और 'अखिल भारत के चोटी के हिन्दी सेवक' महेन्द्रजी के साथ आपका विवाह हुआ।

उन दिनों देश की स्त्रियों में शिक्षा की कमी थी, पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियाँ चरम सीमा तक पहुँच गयी थीं। उनके पति ने उन्हें पढ़ाया एवं स्वतंत्रता संग्राम में अपने साथ सम्मिलित किया। 1930 में सत्याग्रह में सैंकड़ों महिलाएँ पर्दे से बाहर निकल कर स्वतंत्रता संग्राम में भागीदार बनीं, जिनका नेतृत्व श्रीमती अंगूरीजी ने किया। उन्हें 'आगरा जिले का चौथा डिक्टेटर' नियुक्त किया गया।

नमक सत्याग्रह आन्दोलन में आपने कोतवाली पर धरना दिया, पुलिस के प्रहार के कारण उन्हें काफी चोटों का सामना पड़ा, छह माह की सजा व जुर्माना भी हुआ।

जनवरी को 'सैनिक प्रेस' की छत पर सैंकड़ों भाई-बहिन के बीच भाषण दिया, जिसमें पुलिस ने लाठीचार्ज किया तथा उनको (देवीजी) व उनकी बड़ी पुत्री पद्मा को गिरफ्तार किया। पुलिस के द्वारा डंडे मारे जाने पर भी रास्ते भर 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे लगाती रहीं। उस समय वे गर्भवती थीं, फिर भी आपने छह माह की सख्त सजा सहन की।

1946-48 के मध्य में सांप्रदायिक दंगे हुए और उनके पति जेल में नजरबंद थे। उनका यह निर्देश था कि "मेरे सभी कार्यकर्ताओं के परिवारों की सहायता व देखभाल करें" इस काम में भी उन्होंने जागरुकता दिखा घर-घर जाकर लोगों की सहायता की एवं आंदोलनों में भी सक्रिय रहीं।

उनकी देश के प्रति ऐसी भावनाएँ थीं कि 'अनपढ़ तथा पढ़े लिखे सभी इस देश में मूल्यों को पहचानें, इस धरोहर को सहेज कर रखें, देश को समझ कर निरंतर विकास में लगे रहें तथा विदेशी फैशन को न अपनाएँ।

अंगूरीदेवीजी की आंतरिक वेदना थी कि "राजनैतिक पार्टियाँ धर्म को सड़क पर ला रही हैं। धर्म बौद्धिक ज्ञान व मनशुद्धि का साधन है, न कि कुर्सी हथियाने का।" उनके अनुसार वर्तमान में समाज सेवी संस्थाओं, युवाओं तथा देशभक्तों को आगे आने की अत्यधिक आवश्यकता है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 - रिक्त स्थानों की पूति करो -

1. टंट्या .... समुदाय के सदस्य थे।
2. टंट्या .... जेल से भाग गए।
3. अंगूरी देवी ने 26 जनवरी को .... की छत पर सैंकड़ों भाई-बहिनों के बीच भाषण दिया।
4. नमक सत्याग्रह में .... ने धरना दिया।

प्रश्न 2 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. आम जनता टंट्या भील को क्या कहती थी?
2. किस स्टेशन का नाम 'टंट्या मामा स्टेशन' है।
3. अंगूरीदेवी का नारा क्या था?
4. अंगूरीदेवीजी की आंतरिक वेदना क्या थी?

प्रश्न 3 – पाठ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों को सही क्रम दो –

1. 1930 में सत्याग्रह में सैंकड़ों महिलाएँ पर्दे से बाहर निकल कर स्वतत्रंता संग्राम में भागीदार बनीं।
2. अंगूरी देवी की शिक्षा पाँचवीं तक हुई।
3. नमक सत्याग्रह में आपने कोतवाली पर धरना दिया।
4. इन दिनों देश की स्त्रियों में शिक्षा की कमी थी।
5. पुलिस के द्वारा डंडे मारे जाने पर भी 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे लगाती रहीं।

प्रश्न 4 – रचनात्मक अभिव्यक्ति –

बात मन की –

1. स्वतंत्रता सेनानियों का जीवन वर्तमान में हमारे लिए क्या संदेश देता है।
2. 'हम ऐसा क्या करें' – विषय पर रोचक लेख लिखिए। जिससे स्वतंत्रता संग्रामियों का उपकार चुकाया जा सके।
3. अपने प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के 6 चित्र एकत्र कर चित्रित करें।

5 एकांकी : अध्यक्ष

(एक सेठ का मंच पर प्रवेश। सेठजी को सभा का अध्यक्ष नहीं बनाया गया। वे तिलमिला रहे हैं। घर पर प्रातः अपने कक्ष में बैठे-बैठे बड़बड़ा रहे हैं। सेठानी घर में अपना काम करती हुई सुन रही है, सुनने के बाद उनके पास पहुँच जाती हैं)

सेठजी – (अपने आप से) मेरे पास इतना वैभव है कि मेरी सात पीढ़ियाँ बैठे-बैठे खाएँ। मेरे पास क्या कमी है। अब मैं मंदिर में कुछ भी दान नहीं दूँगा।

सेठानी – आप बैठे-बैठे ये क्या कह रहे हो?

सेठ – सोच क्या रहा हूँ, सही कह रहा हूँ। इन्होंने मेरी इज्जत की वाट लगा दी।

सेठानी – अरे किसकी इज्जत! तुम व्यर्थ इतना अभिमान मत करो। यह लक्ष्मी चंचल है, पुण्य की दासी है।

सेठजी – यह सब मेरी मेहनत का फल है।

सेठानी – ठीक है, मेहनत बहुत लोग करते हैं, पर भाग्य साथ न दे, तब क्या करोगे। जरा सोचो!

सेठजी – सोच लिया। समाज वालों ने मुझे अध्यक्ष नहीं बनाकर उस भूरिये को बना दिया, उसमें दम क्या है?

सेठानी - इतना अभिमान मत करो, भूरीलालजी ज्ञानवान हैं। भले धनवान न हों, पर दिल उनका बड़ा है। तुम अपने मन को सरल बनाओ, कषाय कम करो। आज तो वैसे भी उत्तम मार्दव धर्म का दिन है।

सेठजी - आज मार्दव धर्म का दिन है। आपकी बात सही है, पर यह मेरे सम्मान की बात है, मान की नहीं।

सेठानी - यह सम्मान मान का ही दूसरा रूप है, जो तुम्हें कचोट रहा है, आप अपने परिणाम निर्मल करो। एक दिन में एक को ही अध्यक्ष बनाया जायेगा आज-कल में आपको भी अध्यक्ष बनाया ही जायेगा।

सेठजी - यह बात नहीं है। मैं प्रतिवर्ष पहले दिन अध्यक्ष बनता आया हूँ, इस बार मुझे क्यों नहीं बनाया?

सेठानी - इस पद पर आपका पट्टा नहीं है, व्यर्थ के परिणाम छोड़ो और धर्म का विचार करो, उसी में आपकी भलाई है, धन आज है कल नहीं होगा, पर धर्म स्थायी वस्तु है। अतः मान-सम्मान की भावना छोड़कर मार्दव (कोमल) परिणामी बनो।

सेठजी - हे भाग्यवान्! तुमने मेरी आँखें खोल दीं। सचमुच तुम धर्मपत्नी हो।

(पटाक्षेप)

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – अधूरे वाक्यों को पूरा करो –

1. लक्ष्मी .... है, पुण्य की .... है।
2. सम्मान .... का ही दूसरा रूप है।
3. धर्म .... वस्तु है।
4. अपने मन को सरल बनाओ .... कम करो।

प्रश्न 2 – निम्न शब्दों के विलोम शब्द बताइये –

पुण्य, सरल, सम्मान, मान, धर्म।

प्रश्न 3 – निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. सेठजी तिलमिला क्यों रहे थे?
2. सेठानीजी ने सेठजी को कैसा परिणामी बनने का कहा?
3. सेठजी ने मेहनत का फल किसको कहा था?
4. उत्तम क्षमा आदि पर्वों के नाम लिखिए।

प्रश्न 4 – पूछो, समझो, सोचो –

1. अगर सेठजी के अनुसार मेहनत से ही सब कुछ मिल जाता है तो मजदूर इतने गरीब क्यों हैं?
2. पुण्य बँधता कैसे है, विचार करो? हमें पुण्य बाँधना या नहीं।

6 हमारे पर्व

अक्षय तृतीया

अक्षय तृतीया अर्थात् जो कभी क्षय ना हो, इसलिए इस दिन शुभ फलदायक विवाह, दान, पुण्य इत्यादि कार्य किए जाते हैं। वैशाख माह की शुक्ल पक्ष की तृतीया के दिन यह पर्व बड़े धूमधाम से मनाया जाता है । हिंदू धर्म में इसी दिन भगवान विष्णु के छठे अवतार श्री परशुराम का जन्मदिन, त्रेतायुग में गंगावतरण, मां अन्नपूर्णा का जन्मदिन, कुबेर को धन प्राप्ति, महाभारत काल में युधिष्ठिर को अक्षय पात्र की प्राप्ति, श्री कृष्ण द्वारा सुदामा को दान इत्यादि कार्य किए गए थे ।

जैन धर्म के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जिस समय मुनि अवस्था में थे और उन्हें छह माह तक विधि पूर्वक आहार दान कराने वाला कोई नहीं मिला तब हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस व उनके भाई सोम ने मुनिराज ऋषभदेव को वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन इक्षु रस का प्रथम आहार दान दिया था; इसलिए राजा श्रेयांस को दान तीर्थ का प्रवर्तक माना जाता है। प्रथम मुनिराज के लिए प्रथम आहार दिवस होने के कारण जैन परंपरा में दान आदि कार्य करने हेतु यह बहुत उत्तम दिन माना जाता है।

वीर शासन जयंती

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी को वैशाख शुक्ल दशमी (26 अप्रैल 557 ई पूर्व) को पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति तो हुई; परन्तु 66 दिन तक उनका उपदेश नहीं हुआ। जब उनकी सभा में श्रावण कृष्ण एकम (रविवार 18 जुलाई 557 ईसा पूर्व) के दिन इन्द्रभूति गौतम गणधर आए और

उनका हितोपदेश प्रारम्भ हुआ तब से वीर शासन अर्थात् भगवान महावीर स्वामी का शासन प्रारम्भ हुआ, अतः इस दिन वीर शासन जयंती पर्व मनाया जाता है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – सही जोड़ी बनाइये –

1.	महावीर पूर्ण ज्ञान	क.	वैशाख शुक्ल तृतीया
2.	महावीर उपदेश	ख.	वैशाख शुक्ल दशमी
3.	अक्षय तृतीया	ग.	66 दिन बाद
4.	भग. महावीर	घ.	श्रावण कृष्ण एकम
5.	तीर्थंकर महावीर हितोपदेश	ङ.	24वें तीर्थंकर

प्रश्न 2 – एक शब्द में उत्तर लिखिए –

1. राजा श्रेयांस नगर के राजा थे ....
2. दान तीर्थ के प्रवर्तक ....
3. जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ....
4. तीर्थंकर महावीर के गणधर ....
5. जो कभी क्षय न हो ....

प्रश्न 3 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. हिन्दू धर्म के अनुसार भगवान विष्णु के छठे अवतार कौन थे?
2. अक्षय पात्र की प्राप्ति किसको हुई थी?
3. भगवान महावीर के हितोपदेश से क्या प्रारंभ हुआ।
4. राजा श्रेयांस के भाई का नाम क्या था?

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

1. यहाँ आहार दान की बात आई तो पता करिए और भी दान होते हैं क्या और कौन–कौन से हैं?
2. आहार दान की विधि पता करिए।

7 हमारे तीर्थ : मथुरा

मथुरा एक पौराणिक और ऐतिहासिक नगर है यह श्रीकृष्ण की जन्म भूमि है। भारतीय महाकाव्य रामायण के अनुसार इक्ष्वाकु राजकुमार शत्रुघ्न ने लवणासुर नामक राक्षस को मारकर इस भूमि पर सत्ता स्थापित की तथा इसका नाम मधुबन रखा। यही कालांतर में मधुपुरा व बाद में मथुरा हुआ। छठी शताब्दी में मथुरा शौरसेन साम्राज्य की राजधानी थी। चौथी से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व यहाँ मौर्यों ने शासन किया। तीसरी शताब्दी में इंडिका नामक पुस्तक के रचयिता मेगस्थनीज ने मथुरा को मेथोरा कहकर संबोधित किया।

जैन धर्मानुसार श्री कृष्ण त्रेसठ शलाका पुरुषों में से एक अंतिम वसुदेव तथा भावी तीर्थंकर हैं। श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव व नेमिनाथ के पिता समुद्र विजय भाई-भाई थे।

मथुरा नगर में ही जम्बूस्वामी, अर्हद्दास नामक नगर श्रेष्ठी के पुत्र हुए जो बहुत ही आध्यात्मिक व वैराग्य प्रकृति के व्यक्तित्व थे। माता-पिता के बहुत आग्रह करने पर उन्होंने चार कन्याओं से विवाह किया; परन्तु विरक्ति

के कारण वैवाहिक रात्रि में ही उन्होंने अपनी चारों पत्नियों व माता–पिता के साथ धार्मिक चर्चा करते हुए राग के वातावरण को वैराग्यमय कर दिया और प्रात:काल सभी ने गृह त्याग कर दीक्षा ले ली। कालान्तर में जम्बूस्वामी मथुरा से ही मुक्त हुए अत: मथुरा सिद्धक्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – रेखांकित शब्दों के स्थान पर सही शब्द लिखिए –

1. **आगरा** नगर में ही जम्बूस्वामी नगर **कोतवाल** के पुत्र हुए।
2. **आठवीं** शताब्दी में मथुरा मुगल साम्राज्य की राजधानी थी।
3. शत्रुघ्न ने **रावण** को मारकर मथुरा का नाम **मधुपुरा** रखा।
4. श्रीकृष्ण **64 शलाका** पुरुषों में से एक अंतिम **चक्रवर्ती** तथा भावी तीर्थंकर हैं।

प्रश्न 2 – निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. श्रीकृष्ण की जन्म भूमि कौन–सी है? ....
2. शत्रुघ्न के वंश का नाम क्या है? ....
3. मेगस्थनीज की पुस्तक का नाम बताइये। ....
4. नेमिनाथ के पिता कौन थे? ....
5. जम्बूस्वामी कहाँ से मुक्त हुए? ....

प्रश्न 3 – सोचो और बताओ –

1. शलाका पुरुष कौन बनते हैं?
2. तीर्थंकर कौन होते हैं, क्या करते हैं?

8 कविताएँ

दिल में उमंग हो

दिल में उमंग हो,
हौंसला बुलंद हो
उठ रही तरंग हो,
यदि ध्वनि दबंग हो

चपल यदि अंग हो,
भाग्य यदि संग हो
पावन हो भावना,
नहीं कोई चाहना

दीनता न अहंकार,
वसुधा से होय प्यार
हर कोई देगा साथ,
विपदा झुकाये माथ।

यदि कहो पीछे घूम
दांये घूम, बांये घूम,
मंद चल-तेज चल
हो जाओ अब अचल,

तेरे ही इशारे पर
झूमे सारा परिकर,
डटे रहो-बढ़े चलो
भेदभाव दले चलो,

है सारा जग हमारा
हो एक यही नारा,
सफलता अन्य न कहीं
जहाँ कदम हैं वहीं,

स्वस्थ रह-प्रसन्न रह
वन्दे मातरम् तूं कह।।

दादाजी की सीख

चिंटू मिंटू सदा ही लड़ते, बात-बात में खूब झगड़ते।
चिंटू ने मिंटू को पीटा, बाल पकड़ के खूब घसीटा।।
मिंटू ने चिंटू को पकड़ा, पटक पटक धरती पर रगड़ा।
दोनों के ही सिर झन्नाये, दोनों के दादाजी आये।
लड़ने के सब दोष गिनाये, प्रेम मित्रता के गुण गाये।
फिर दोनों का मेल कराया, चिंटू मिंटू ने सुख पाया।।

चींटी से सीख

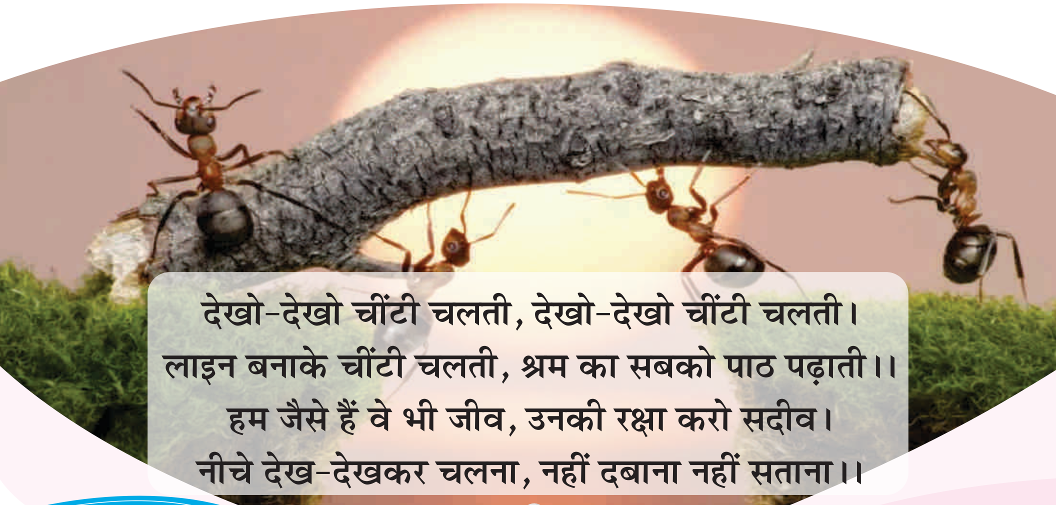

देखो-देखो चींटी चलती, देखो-देखो चींटी चलती।
लाइन बनाके चींटी चलती, श्रम का सबको पाठ पढ़ाती।।
हम जैसे हैं वे भी जीव, उनकी रक्षा करो सदीव।
नीचे देख-देखकर चलना, नहीं दबाना नहीं सताना।।

सीख

अरे! गुलाब सिखाता हमको काँटों में भी खिलना।
और कमल सिखलाता हमको सबसे भिन्न सु रहना।।
कौवे से भी अरे सीखना बुला-बुला कर खाना।
साथ नहीं जायेगा कुछ भी, सभी छोड़कर जाना।।
मीठे बोल बोलना सीखो कोयल से हे भाई!
थोड़ा लेकर ज्यादा देना गौ-शिक्षा सुखदाई।।
पत्थर खा कर भी फल देता देखो वृक्ष मनोहर।
पर उपकार सदा ही करता स्वयं कष्ट भी सहकर।।
मेघ सभी को पानी देते, सूरज सहज उजाला।
सबकी प्यास बुझाते सरवर, क्या गोरा क्या काला।।
मिथ्या पक्षपात को छोड़ो, वस्तुस्वरूप पिछानो।
निर्णय करके अनुभव करके सत्य सहज ही मानो।।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – निम्न पंक्तियों को पूरा करो –

1. चपल यदि .... कोई चाहना।
2. है सारा .... कदम हैं वहीं।
3. देखो–देखो .... पाठ पढ़ाती।
4. कौवे .... छोड़कर जाना।

प्रश्न 2 – सही जोड़ी बनाइये –

किससे क्या सीखना

	किससे		सीखना
1.	कोयल	क.	सबसे भिन्न
2.	गुलाब	ख.	बुला–बुला कर खाना
3.	कमल	ग.	पर उपकार
4.	कौआ	घ.	मीठा बोल
5.	वृक्ष	ङ.	कांटों में खिलना

प्रश्न 3 – लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर –

1. 'दिल में उमंग' कविता के अनुसार बताइये कि सफलता कहाँ है?
2. 'दादाजी की सीख' कविता के अनुसार दादाजी ने क्या बताया है?
3. चींटी किसका पाठ पढ़ाती है?
4. 'सीख' कविता के अनुसार वस्तुस्वरूप पहचानने के लिए क्या करना होगा?

९ सदाचार

अब नहीं छोड़ूँगा

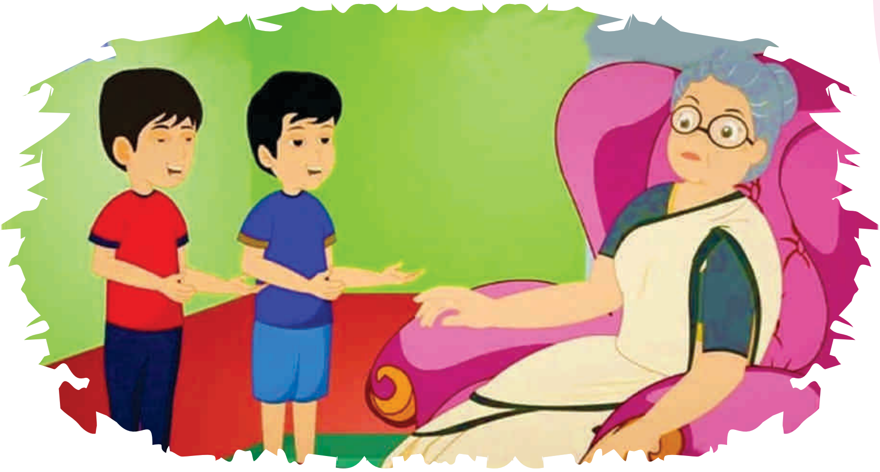

"ये क्या विज्ञ ! आज फिर टिफिन का पूरा भोजन नहीं किया। तुम्हारी तो आदत पड़ गई है जूठा भोजन छोड़ने की घर पर यही हाल और स्कूल में भी....।"

"अरे मम्मी ! आप भी छोटी-छोटी सी बात पर शिकायत करती रहती हो...।"

"विज्ञ ! तुम्हें ये छोटी सी बात लगती है, तुम जानते हो...।"

"मम्मी बस करो न...कितना प्रवचन दोगी मुझे।" विज्ञ पैर पटकते हुए बोला।

"तुम्हें यह प्रवचन लगता है, परन्तु मैं तुम्हारे भले के लिए ही कह रही हूँ...मम्मी दु:खी और निराश होकर बोलीं।"

"अरे मम्मी ! हो गया ना..." विज्ञ मम्मी को हाथ जोड़कर बोला।

मम्मी (दु:खी मन से) - "ठीक है विज्ञ ! तुम्हें बुरा लगता है तो मैं आगे से कभी नहीं बोलूँगी।"

कुछ दिन बाद विज्ञ अपने मम्मी–पापा के साथ एक पार्टी में गया। पार्टी से लौटते समय कुछ बच्चे दिखे जो पार्टी के जूठे बर्तन में से भोजन बीनकर खा रहे थे। विज्ञ बोला – ''देखो पापा! कितने गन्दे बच्चे हैं, जो प्लेटों से जूठा भोजन निकाल कर खा रहे हैं।''

''बेटा! इन बच्चों की मजबूरी है। ये बहुत गरीब बच्चे हैं।'' पापा ने समझाते हुए कहा।

''तो क्या हुआ? इनको ऐसा जूठा भोजन नहीं करना चाहिए।'' विज्ञ ने बड़ों जैसे बात करते हुए कहा।

''बेटा! तुम्हें मम्मी रोज स्वादिष्ट भोजन बनाकर देती है तो तुम्हें इनका दु:ख महसूस नहीं होगा।''

''पापा! मैं समझा नहीं।'' विज्ञ ने जिज्ञासा से कहा।

पापा ने विज्ञ के कंधे पर हाथ रखकर कहा – ''देखो विज्ञ! इन बच्चों के माता–पिता बहुत गरीब हैं। इन बच्चों को भरपेट भोजन भी नहीं मिलता और मिलता भी है तो रुखा–सूखा। ये तो ऐसे ही अपना पेट भरते हैं और तुम जूठा भोजन छोड़ते हो और मम्मी आपको कुछ कहती है तो आपको बुरा लगता है।''

''और बेटा! एक बात और....'' मम्मी ने विज्ञ से कहा – ''देखो! झूठे भोजन में कितने कीड़े और चींटी घूम रही हैं। ये सब अब मारे जायेंगे।''

''इसका मतलब यह हुआ कि झूठा भोजन छोड़ने से हिंसा का पाप भी लगता है।'' विज्ञ ने समझदार बनते हुए कहा।

''हाँ बेटा! झूठा भोजन छोड़ने से हानि ही हैं लाभ कुछ नहीं...।''

''विज्ञ कान पकड़ कर बोला – सॉरी मम्मी! मैं सब समझ गया। मैं वादा करता हूँ कि आज के बाद कभी झूठा भोजन नहीं छोडूँगा।''

''शाबाश मेरे बच्चे।'' मम्मी ने विज्ञ के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

ईमानदारी

1. संतोष, सादगी, मितव्ययता,स्वावलम्बन और कष्ट सहिष्णुता पूर्वक ही व्यक्ति ईमानदार रह सकता है।
2. आवश्यकता एवं श्रम के अनुसार ही धन, वस्तु आदि ग्रहण करें। अनावश्यक होने पर कुछ भी न लें। बिना मूल्य मिलने पर भी ललचावें नहीं।
3. किसी से अधिक वस्तु या धनादि लेने का प्रयत्न न करें। सामूहिक कार्य का भी समस्त श्रेय, स्वयं ही लेने की आदत न डालें। व्यवहार में भी व्यक्तिगत कार्य भी, सहयोग से ही सम्पन्न होते हैं; अतः दूसरों के सहयोग एवं अंश को न नकारें, न कम करें।
4. किसी को न कम तौलें, न कम नापें, न कम समझें। सह-अस्तित्व की भावना ऊर्ध्व रखें।
5. लोभवश अनुचित मिलावट न करें। अहं प्रदर्शन से बचें। सम्मान की अतिरिक्त चाह, ईर्ष्या, विषयों की आसक्ति भी व्यक्ति को बेईमान बना देती है। नशा, जुआ, कुशीलादि व्यसनों एवं प्रमाद से दूर रहें।
6. वस्त्र, खान-पान, घर और फर्नीचरादि सादा होने से विलासिता की सामग्री न होने से, अपना कार्य स्वयं करने से हीनता नहीं, गौरव का अनुभव करें।
7. कर्तव्य, अनुशासन, नियम, वचन एवं समयबद्धता का पालन करने में उपहास या मिथ्या आलोचना एवं कष्टों की परवाह न करें।

8. अच्छी संगति करें एवं अच्छा साहित्य पढ़ें।
9. स्वार्थी और मिथ्या प्रशंसकों से सावधान रहें।
10. परमार्थ से स्व को स्व और पर को पर समझ कर, पर से विरक्त हो, स्व में संतुष्ट रहने का पुरुषार्थ करें।
11. ज्ञेयों को मात्र ज्ञेय ही समझें, उनमें इष्ट-अनिष्ट की कल्पना करते हुए राग-द्वेष न करें।

कहीं देर न हो जाये

वर्तमान के आधुनिक समय में मोबाइल आदि जीवन के अनिवार्य अंग बन गये हैं। इनके बिना जीवन के कई कार्य असंभव हो गये हैं। चाहे बैंक के कार्य हों या गैस सिलेण्डर बुक करना हो, चाहे पढ़ाई करना हो या स्वाध्याय हम सबकी आज अनिवार्यता में बदल गई है। मोबाइल आदि से काम आसान होने के साथ अनेक समस्यायें भी खड़ी होती जा रहीं हैं। हमारी लापरवाही आज बच्चों की जान ले रही है। आज हर परिवार में एक या दो बच्चे ही होते हैं और सभी माता-पिता अपने बच्चों को जीवन की पूरी सुविधा देकर उनका पालन-पोषण करने का प्रयास करते हैं। उनकी हर अच्छी बुरी इच्छा को पूरी करना माता-पिता का दायित्व बन गया है। बच्चों का जरा सा रोना घर वालों को बर्दाश्त

नहीं होता। यदि बच्चा मोबाइल माँगता है और न देने पर रोने लगता है तो तुरन्त घर वाले कहने लगते हैं कि "रुलाओ मत बच्चे को, दे दो मोबाइल" और बच्चे के मन में बैठ जाता है कि अपनी कोई भी माँग मनवाना है तो बस रोना शुरु कर दो। वह जिद्दी और गुस्सैल हो जाता है। इस तरह बच्चा अच्छे–बुरे की पहचान नहीं कर पाता और बड़े होने पर जरा सी प्रतिकूलता उन्हें विचलित कर देती है। हमें याद है कि जब हम छोटे थे तो हमारी किसी भी गलत माँग पर पिटाई हो जाया करती थी फिर हमें यह महसूस हो गया कि हमारी गलत इच्छा पूरी नहीं होगी चाहे हम कितनी भी जिद कर लें।

आज अभिभावकों के अति लाड़–प्यार के दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं। 30 अक्टूबर को जोधपुर के मंडोर क्षेत्र में रहने वाले 16 वर्ष के सौरभपुरी ने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सौरभ काफी प्रतिभाशाली छात्र था। रविवार को जब उसकी बहन उसके कमरे में उसे बुलाने के लिये गई तो देखा वह फाँसी के फंदे पर लटक रहा था। कारण खोजने पर पता चला कि वह मोबाइल पर कार रेसिंग गेम खेलने का बहुत शौकीन था। वह कई–कई घंटे तक मोबाइल पर गेम खेलता रहता था। जब एक कार रेसिंग गेम हार गया तो दुखी होकर उसने आत्महत्या कर ली।

सौरभ यह नहीं समझ पाया कि वर्चुअल दुनिया से रियल दुनिया बिल्कुल अलग है। लेकिन जब वर्चुअल दुनिया ही वास्तविक लगने लगे तो ऐसी घटना होना स्वाभाविक है। ऐसे ही कर्नाटक के एक प्रसिद्ध हीरो पुनीत राजकुमार की मात्र 46 वर्ष की उम्र में मृत्यु हो गई। वहाँ उसके सात प्रशंसकों ने दुखी होकर आत्महत्या कर ली। आत्महत्या करने से उनकी तो दुर्गति हुई ही साथ उनके परिवार के सदस्यों को जीवन भर के लिये दुख दे गया।

इसी तरह भोपाल में चौथी कक्षा में पढ़ने वाली 12 साल की दुर्गा ने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली। कारण बस इतना सा था कि दुर्गा पढ़ने में बहुत कमजोर थी। ऑनलाईन पढ़ाई के लिए उसे उसके पिता ने उसे मोबाइल दिलाया था। पर क्लास के बाद दिनभर मोबाइल पर गेम खेलती थी। उसकी दादी ने डाँटते हुए कह दिया था कि "दिन भर मोबाइल चलाती हो, जरा पढ़ाई पर ध्यान दिया करो।" बस दादी की इतनी बात दुर्गा को पसंद नहीं आई और उसने अपने दुपट्टे से फँदा बनाकर आत्महत्या कर ली। मात्र 12 साल की उम्र और इतना गुस्सा।

हम अपने बच्चों को यह नहीं सिखा पा रहे कि "असफलता भी जीवन का एक अंग है।" हर व्यक्ति को हर कार्य में सफलता मिले ही ऐसा संभव नहीं होता। इसीलिए असफलताओं को स्वीकार करना जीवन की कला है। बच्चे की हर जिद पूरी करना ही उसे कमजोर बनाता है। माता-पिता की अधिक महत्त्वाकांक्षायें बच्चों को मानसिक रूप से कमजोर बना रही हैं।

एक और घटना में 5 नवम्बर को राजस्थान के झुंझनू में 10वीं कक्षा के 14 साल के छात्र सौरभ ने खाली प्लॉट पर बने पानी के टैंक में कूदकर जान दे दी। अपने सुसाइड नोट में लिखा कि "पापा-मम्मी मुझे माफ करना। मैं आपकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतर सका।" आखिर वे उम्मीदें क्या हैं जो हम बच्चे की योग्यता से अधिक पूरी करवाना चाहते हैं?

यदि हम ऐसी समस्याओं और दुर्घटनाओं से बचना चाहते हैं तो उन्हें सुविधाओं के साथ समय दें। उन्हें अपने जीवन के अनुभव सुनायें, अपने जीवन के संघर्ष और उन संघर्षों का सामना करने की सोच दें कि प्रतिस्पर्धा के दौर में अपना संबल नहीं खोना और ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करने की सीख दें। घर के वरिष्ठ सदस्यों का अनुभव, माता-पिता की प्रेरणा और जिनवाणी के सिद्धान्तों का अध्ययन कर उनके सुखमय जीवन की आधारशिला अवश्य बनेगा।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 - निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. झूठा भोजन छोड़ने से क्या होता है?
2. 'ईमानदारी' पाठ के अनुसार गौरव का अनुभव कब करें?
3. किससे सावधान रहें?
4. मोबाईल किस-किस काम आता है?

प्रश्न 2 - बात सोच की - (उत्तर लिखें/विचारें)

1. सौरभ पुरी ने फाँसी क्यों लगा ली?
2. रोकर अपनी बात मनवाना सही है या नहीं?

प्रश्न 3 - सही कथन पर सही तथा गलत कथन पर गलत का चिन्ह लगाइए -

1. झूठे भोजन में कीड़े आदि जीव उत्पन्न हो जाते हैं।
2. संतोष सादगी मितव्ययता स्वावलम्बन से व्यक्ति ईमानदार नहीं रह सकता है।
3. बुरी संगति और बुरा साहित्य पढ़ें।
4. नशा, जुआ, कुशीलादि व्यसनों एवं प्रमाद से दूर रहें।
5. लोभवश अनुचित मिलावट करें।

प्रश्न 4 - हँसते-गाते -

1. झूठा भोजन छोड़ने से होने वाली हानियों का चित्र बनाइए।
2. मान लीजिए, आप सड़क पर कहीं जा रहे हैं। वहाँ एक बच्चा झूठा भोजन कर रहा है। आप ऐसी स्थिति में क्या करेंगे? किसी एक को चुनकर कारण सहित लिखिए?

क. पुलिस को सूचना देंगे

ख. माता-पिता को बुलायेंगे।

ग. बच्चे को समझायेंगे।

घ. बच्चे को अच्छी सुविधा देंगे।

10 जीवन निहारें-जीवन निखारें

हमारे विचार - सुखी जीवन का आधार

''यदि शारीरिक शक्ति न भी हो, लेकिन अंतर्मन में अदम्य आत्म-विश्वास हो तो सफलता को सहजता से प्राप्त किया जा सकता है।''

"Even if there is no physical power, but if there is indomitable confidence within then success can be achieved easily."

- अज्ञात

किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके विचार, वाणी और कर्म के आधार से पहचाना जा सकता है। यदि हम अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बनाना चाहते हैं, सर्वप्रिय बनना चाहते हैं, जीवन में शांति चाहते हैं, भावी जीवन भी हमारा सुख-शांतिमय हो, धर्म का समागम प्राप्त हो -ऐसा चाहते हैं तो हमें अपने विचार, वाणी और कर्म को निहारना होगा, निखारना होगा तभी हमारा जीवन निखरेगा।

हम यहाँ पर क्रमशः विचार, वाणी और कर्म के माध्यम से चर्चा को आगे बढ़ाएँगे। हमारे आचार्य भगवंतों ने हमें प्रेरणा दी है कि जो सज्जन

व्यक्ति है/धर्मात्मा है/जिनको लोग अपना आदर्श मानते हैं/जिनका आदर करते हैं, उनके जीवन में किस प्रकार की भावनाएँ रहती हैं; यदि हम भी उन भावनाओं को अपने जीवन में लाएँ, उस प्रकार के विचार हमारे हों तो हमारा जीवन भी एक आदर्श जीवन बन सकता है।

जैनदर्शन की गीता के रूप में विख्यात 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रंथ में 'आचार्य उमास्वामी' देव लिखते हैं –

'मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्य-मानाविनयेषु।।7/11'

प्रत्येक प्राणी के साथ हमारा मैत्री भाव हो, जो हमसे गुणों में अधिक हैं/गुणवान हैं ऐसे व्यक्तियों के प्रति प्रमोद/प्रसन्नता का भाव हो, जो जीव कष्ट में हैं/दुःखी हैं, उनके प्रति करुणा का भाव हो और जो अविनयी हैं/दुर्जन हैं/उद्दंड हैं ऐसे व्यक्तियों के प्रति हमारी मध्यस्थता की भावना हो।

'आचार्य अमितगति' ने 'सामायिक पाठ' में यही भावना व्यक्त की है –

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव।।1।।

इन चार प्रकार के विचारों को ही, 'मैत्री भावना, प्रमोद भावना, कारुण्य भावना और माध्यस्थ भावना' नाम से जाना जाता है। आप इन भावनाओं का विचार करेंगे तो पायेंगे कि यह कितनी उदात्त भावनाएँ हैं, हमारे जीवन को कितना तेज देने वाली भावनाएँ हैं, कितना निखारने वाली भावनाएँ हैं।

1. मैत्री भावना – 'प्रेम भाव हो सब जीवों में' अथवा 'मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे' इस उदात्त भावना से हमारा चित्त भरा हुआ हो। कोई भी प्राणी चाहे वह किसी भी गति का हो, किसी भी जाति

का हो, निर्धन हो, अमीर हो, किसी भी धर्म को मानने वाला हो, वह मनुष्य या पशु होने से पहले अथवा हिंदू-मुसलमान होने से पहले एक जीव है/प्राणी है। मैं भी जीव हूँ। हममें और उसमें यह समानता है कि मैं जीव हूँ, वह जीव है, मैं ज्ञान-दर्शन आदि सहित हूँ, वह भी ज्ञान-दर्शन आदि सहित है, मैं सुख चाहता हूँ, वह भी सुख चाहता है। हम सब समान हैं तो फिर उनमें मित्रता की ही भावना हो। किसी भी प्राणी के प्रति शत्रुता की भावना हमारे मन में उत्पन्न न हो, यदि ऐसा होता है तो हमारा जीवन कांतिमान होगा।

2. प्रमोद भावना - 'गुणीजनों में हर्ष प्रभो' अथवा 'गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे' की भावना हृदय में हो। मनुष्य की सबसे बड़ी कमी यह है कि वह दूसरों के विद्यमान गुणों को भी न देखकर, जो दोष उसमें नहीं है, उन्हें भी देखता है और अपने में जो दोष हैं उनको भी गुण के रूप में देखता है। इस कारण से अनेक गुणवंत व्यक्तियों के समागम में आकर भी उनके गुणों की प्रशंसा नहीं करता, उनको आदर नहीं देता और जो गुणवानों को आदर नहीं देता, उसका भी कहीं आदर नहीं होता।

यह भावना कहती है कि गुणीजनों को देखकर हमारे हृदय में अत्यंत प्रेम उमड़ आवे। जिस तरह बादल सहज ही उमड़ करके आते हैं और बरसने लगते हैं। माता के हृदय में अपने छोटे से शिशु को देखकर प्रेम उमड़ आता है, उसके स्तन में दूध प्रवाहित होने लगता है; इसी प्रकार हम गुणीजनों को देखकर हृदय से प्रसन्नता व्यक्त करें।

प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई गुण होता है, यदि हम दूसरों के गुण देखेंगे, उन गुणों की प्रशंसा करेंगे, गुणीजनों की प्रशंसा करेंगे, तो हमारे अंदर भी वह गुण उत्पन्न होगा। अन्य के गुण हमारे में आएँ या न आएँ परंतु

सबसे बड़ा गुण और लाभ यही होगा कि हम गुणीजनों का आदर कर रहे हैं/उनको देखकर प्रसन्न हो रहे हैं। हमारी प्रसन्नता देखकर हर व्यक्ति कहेगा –''यह कितना गुणग्राही है? जिसके भी गुण देखता है, कितनी उदारता के साथ उनकी अनुमोदना करता है/प्रशंसा करता है। बहुत ही सज्जन व्यक्ति है।'' यह भावना भी हमारे जीवन को निखारने वाली भावना है।

3. कारुण्य भावना – 'करुणास्त्रोत बहे दु:खियों पर' अथवा 'दीन दु:खी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्त्रोत बहे' की भावना हमारे हृदय में निरंतर वृद्धिंगत हो।

हर प्राणी का दु:ख दूर करने के लिए हम सहयोग कर सकें, यह संभव नहीं है, किसी तड़पते हुए पशु अथवा व्यक्ति को हम उचित उपचार दिला सकें, शायद यह भी हमारे लिए उस समय संभव न हो; फिर भी हमारा हृदय अन्य जीवों के दु:ख को देखकर दु:खी हो उठे। हमारे हृदय में यह भावना उत्पन्न हो 'हे भगवन्! इसका दु:ख दूर कैसे होगा? हे प्रभु! कोई भी प्राणी दु:खी न हो।' 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे संतु निरामया:' की हमारी उदार भावना हो।

वर्तमान में कोरोना रोग चारों और फैल रहा है – ऐसे में हम घर से बाहर भी नहीं निकल पा रहे हैं; परंतु हम घर में रह करके भी पूरे विश्व में जो बीमार हो रहे हैं, जिनके परिवारों में मृत्यु हो रही हैं, उनके प्रति अपनी संवेदनाएँ रख सकते हैं। यहाँ तक कि केवल मनुष्य ही नहीं, कोई पशु-पक्षी भी रोगी/दु:खी न हो, भूखा-प्यासा न रहे और यदि कोई ऐसा दिखता है, तो उनको देख करके हमारे हृदय में करुणा का भाव प्रवाहित होने लग जाए, दया का भाव प्रवाहित होने लग जाए और यथासंभव उनके दु:ख दूर करने के लिए प्रयास करें। यह दयालुता हमारे चरित्र को निखारने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

4. माध्यस्थ भावना – 'दुर्जन में मध्यस्थ विभो' अथवा 'दुर्जन क्रूर कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे' जो विपरीत आचरणवाले दुराचारी/भ्रष्टाचारी/अनाचारी हैं, धर्म के विपरीत आचरण करनेवाले हैं; जिनकी मान्यताएँ वस्तुव्यवस्था से विपरीत हैं, न्याय–नीति से विपरीत हैं, अन्याय–अनीति से ग्रस्त हैं ऐसे व्यक्तियों के प्रति भी हमारे हृदय में दुष्टता का भाव न हो; बल्कि मध्यस्थपने का भाव हो। न हम उनसे कोई अपेक्षा रखें, न ही उनके सामने उपेक्षा करें; बल्कि उनसे मध्यस्थता रखते हुए/उनसे यथोचित दूरी बनाए रखते हुए उनसे व्यवहार करें।

दुर्जन व्यक्ति की मित्रता तो हमें दुर्जनता की ओर ले ही जाती है; परंतु उनसे यदि हम शत्रुता करते हैं, उनकी उपेक्षा करते हैं तो वह भी हमारे जीवन में संकट उत्पन्न कर सकती है। इसलिए उनसे मित्रता/शत्रुता न करके मध्यस्थता का भाव रखते हुए व्यवहार करें।

यह भी विचारणीय है कि आज जो दुराचारी है, वही सत्य समझ कर सदाचारी भी हो सकता है। जिसे हम भ्रष्टाचारी कह रहे हैं, वही सच में कल शिष्टाचारी भी हो सकता है। जो आज धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला है, वही सन्मार्ग पर चलकर, हमसे बहुत आगे जा सकता है। इसलिए उससे वर्तमान की परिस्थिति को देखते हुए राग करना तो उचित नहीं है; परंतु द्वेष करना भी उचित नहीं है। हम मध्यस्थ भाव रखकर जीवन जियें।

मित्रो! इन चार भावनाओं को हम अपने जीवन में लाने का प्रयास करें। हम अपने जीवन को निहारें कि क्या ऐसी भावनाएँ/विचार हमारे हृदय में हैं? यदि नहीं हैं तो इन भावनाओं/विचारों को अपने जीवन में स्थान देकर और अपने जीवन को निखारें।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व किसके आधार से पहचाना जा सकताहै?
2. हमारा जीवन कांतिमान कब होता है?
3. गुणीजनों को देखकर हमारे मन में प्रेम का उमड़ना कौनसी भावना है?
4. चार प्रकार की भावनाएँ कौन–सी हैं?
5. 'सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया:' ये पंक्ति किस भावना को बताने वाली है?

प्रश्न 2 – दिए गए शब्दों के उचित विलोम शब्द मिलाए –

1.	दुराचारी	क.	अनीति
2.	मित्रता	ख.	सदाचारी
3.	न्याय	ग.	शिष्टाचारी
4.	राग	घ.	शत्रुता
5.	भ्रष्टाचारी	ङ:	द्वेष
6.	नीति	च.	अन्याय

प्रश्न 3 – दिए गए वाक्यों को उचित रिक्त स्थानों से पूर्ति कीजिए –

1. दुर्जन, क्रूर कुमार्गरतों पर .... नहीं मुझको आवे।
2. दयालुता हमारे चरित्र को .... में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।
3. दुर्जन व्यक्ति की मित्रता हमें .... की ओर ले जाती है।
4. गुणीजनों को देखकर हमारे हृदय में अत्यन्त .... उमड़ आवे।
5. मैत्री भाव जगत में मेरा .... जीवों पर नित्य रहे।

प्रश्न 4 – मूल्य परक प्रश्न –

1. कोई बच्चा चौराहे पर आपकी गाड़ी के सामने आकर कुछ पैसे माँगता है, तो आपको चारों भावनाओं में से कौनसी भावना उमड़ेगी?
2. 'सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया:' पंक्ति क्या संदेश देती है?

11 शिक्षाप्रद कहानियाँ

विनय का फल : कौण्डेश बने कुन्दकुन्द

एक कुडमलई (कौण्डकुन्दपुर) नाम का गाँव है। उसमें मतिवरण (कौण्डेश) नाम का ग्वाला रहता था। वह पढ़ा-लिखा तो नहीं था, किन्तु अत्यन्त विनयवान एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति था। वह अपने सेठ की गायें चराने के लिए जंगल जाता था। वह नियमित रूप से उन्हें चराने ले जाता और उनका ध्यान रखता तथा वापस लाकर उन्हें सेठ की गौशाला में बाँध देता। इस प्रकार वह गायों का प्रेमपूर्वक पालन करता था।

एक बार जब वह गायें चराने के लिए जंगल पहुँचा, तब उसने देखा कि सारा जंगल दावाग्नि से जलकर नष्ट हो गया है, परन्तु एक वृक्ष हरा-भरा है। वह आश्चर्य में पड़ गया कि सारा जंगल नष्ट होने पर भी यह वृक्ष हरा-भरा कैसे रह गया? यह क्यों नहीं जला? आखिर बात क्या है? जब उसने वृक्ष के चारों ओर जिज्ञासापूर्वक ध्यान से देखा तो उसे उस वृक्ष की कोटर में एक शास्त्र रखा दिखायी दिया। उसे इसका कारण समझने में ज्यादा देर नहीं लगी। वह समझ गया कि यह तो इस शास्त्र का चमत्कार है। उसने उस परम पवित्र चमत्कारी शास्त्र को साष्टांग नमस्कार किया। बड़ी ही विनय से उसे उठाया। अपने मस्तक पर विराजमान करके अपने घर ले

गया। उसे एक पवित्र स्थान पर विराजमान कर दिया तथा निरन्तर उसका विशेष बहुमान करने लगा। शास्त्र देखकर वह उसकी महिमा से रोमांचित हो जाता था। यद्यपि उसे 'काला अक्षर भैंस बराबर' था, परन्तु शास्त्र की प्राप्ति–संबंधी चमत्कारिक घटना याद करके उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहता था।

एक दिन गायें चराते हुए उसे एक दिगम्बर मुनिराज दिखे। उन्हें देखकर वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और सोचने लगा कि 'जैन मुनिराज तो महान विद्वान होते हैं, क्यों न यह शास्त्र उन्हें भेंट कर दिया जाये। मैं तो अनपढ़–गँवार रह गया, मुझे तो कुछ समझ में नहीं आता, परन्तु ये मुनिराज तो शास्त्र के रहस्य को समझ सकते हैं। यह विचार कर वह शीघ्र घर गया और बड़े ही आदर के साथ शास्त्र ले आया और मुनिराज को प्रदान कर दिया। शास्त्रदान करते हुए उसका हृदय हर्ष से आपूर्ण था। उसने आदर, भक्ति और आनन्दपूर्वक शास्त्रदान किया था। जैसे ही मुनिराज ने वह शास्त्र अपने हाथों में लिया, उनका चेहरा प्रसन्नता से खिल गया। मुनिराज की प्रसन्नता देखकर ग्वाला और अधिक प्रसन्न हुआ। वह एक जैन शास्त्र था। मुनिराज शास्त्र पढ़ते हुए बोल उठे –

'अहाहा! यह तो अशरीरी होने का शास्त्र है।' ग्वाला जिज्ञासापूर्वक मुनिराज के चरणों में बैठ गया और प्रार्थना करने लगा कि उस चमत्कारिक शास्त्र का मर्म उसे भी बताया जाए। उसकी प्रार्थना सुनकर मुनिराज ने कहा – "हे भव्य! तुम भी एक जीव हो। सुख तुम्हारे अन्दर ही है तथा ज्ञानलक्षण से तुम स्वयं को जान सकते हो। तुम इस शरीर से भिन्न अपने आत्मस्वरूप को जानो, पहचानो और उसमें ही लीन हो जाओ तो तुम भी भगवान बन सकते हो। अतः संसार, शरीर और भोगों से विरक्त होकर तुम अपने ज्ञानानन्द स्वभाव का अनुभव करो।"

मुनिराज का उपदेश सुनकर ग्वाला संसार, शरीर और भोगों से उदासीन रहने लगा तथा विचार करने लगा कि 'मैं आत्मा हूँ, ज्ञान मेरा स्वभाव है, मैं स्वयं को जानकर, पहचान कर, उसमें लीन होकर भगवान बन सकता हूँ तथा ये गायें भी मेरे ही समान जीव हैं। ये भी आगे चलकर भगवान बन सकती हैं' ऐसा विचार कर गायों के प्रति अधिक दयालु हो गया।

एक दिन एक गाय पानी पीने के लिए तालाब के किनारे गयी। वहाँ उसका पैर फिसल गया और वह तालाब में गिर गयी। जब ग्वाले ने गाय को पानी में डूबते हुए देखा तो वह उसे बचाने के लिए तालाब में घुस गया। तालाब में एक ठूंठ से टकराकर ग्वाले की मृत्यु हो गयी।

धन्य है ग्वाले का जीवन ! वह अनपढ़ होने पर भी उसने जिनवाणी की भक्ति की, उसकी विनय की और उत्तम पात्र मुनिराज को शास्त्रदान दिया। मुनिराज से शास्त्र का रहस्य सुनकर अत्यन्त हर्षित हुआ। तत्त्वविचार में मग्न रहने लगा। अन्य जीवों को अपने समान देखता हुआ उनके प्रति दयालु हो गया। परमार्थ के उपदेश से उसका व्यवहार भी पवित्र हो गया। अन्त में शान्त परिणामों से मरा। इन परिणामों का यह फल हुआ कि वह ग्वाला मरकर अगले भव में कलिकाल सर्वज्ञ, महान दिग्गज आचार्य, जिनशासन प्रभावक, भारतभूमि में अलंकार स्वरूप, समयसार आदि पंच परमागमोंरूपी द्वितीय श्रुतस्कंध का प्रणेता हुआ और 'आचार्य कुन्दकुन्ददेव' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यह पूर्वभव में की गयी शास्त्र की विनय का ही फल था कि बालक कुन्दकुन्द (पद्मनन्दि) जन्म से ही महान प्रतिभाशाली थे। वे ग्वाले के भव में एक अक्षर भी पढ़ना नहीं जानते थे, परन्तु वर्तमान भव में इस तरह सारी विद्याएँ सीख गये, जैसे सब कुछ पहले से ही जानते थे, बस भूल गये थे और विद्वानों के द्वारा बताये जाने पर सारी विद्याएँ याद आ गयी हों। यह

सब शास्त्र की विनय तथा पवित्रता का ही फल था, जो संस्काररूप में वर्तमान भव में जागृत हो गया था। ग्यारह वर्ष की आयु में ही उन्होंने जिनदीक्षा धारण कर ली और महान तपश्चरण किया एवं तैंतीस वर्ष की आयु में ही उन्होंने आचार्य पद प्राप्त किया। ये सब शास्त्र की विनय एवं शास्त्रदान का ही फल था।

अहिंसा परमो धर्मः

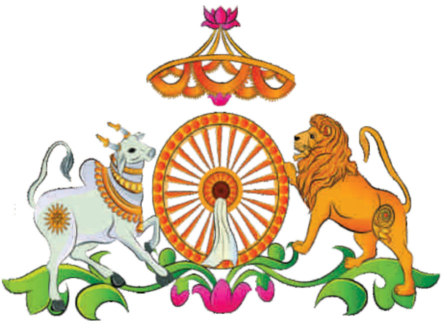

हमारा भारत देश अहिंसा प्रधान देश है। अहिंसा को ही एक हथियार के रूप में उपयोग करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देश को स्वतंत्र कराने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अहिंसा को परम धर्म अर्थात् श्रेष्ठ धर्म कहा जाता है।

किसी भी जीव को मारना, सताना या दिल दुखाना हिंसा है। जब हम किसी भी प्राणी को चाहे वह मनुष्य हो या पशु पक्षी हो उसे हम दुखी करने का विचार करते हैं, परेशान करने के बारे में सोचते हैं, तो यह भाव/विचार भी हिंसा ही हैं।

हमारे जीवन में हिंसा के अनेक प्रसंग बनते हैं जिन्हें चार प्रकार से समझाया गया है। हमें यथाशक्ति सावधानी रखते हुए इनसे बचना चाहिए।

1. जब कभी हम किसी भी व्यक्ति को अपना शत्रु मानकर या इसने मेरा बुरा किया है, अहित किया है ऐसा विचार कर उसे मारने-सताने का संकल्प करते हैं और संकल्प करके योजनाबद्ध तरीके से किसी को मारना चाहते हैं तो वह संकल्पी हिंसा कहलाती है। ऐसी हिंसा बहुत बुरी है हमें इससे नियम पूर्वक बचना ही चाहिए। किसी ने गलती से हमारा बुरा किया

हो, हमें बुरा कहा हो, हमें नुकसान पहुँचाया हो तो भी हमें किसी को जान से मारने या दिल दुखाने के लिए योजना बनाकर संकल्प पूर्वक हिंसा नहीं करना चाहिए।

हमें सबसे पहले इस संकल्पी हिंसा का त्याग अवश्य करना चाहिए। इस संकल्पी हिंसा के भाव से ही मनुष्य उग्रवाद और आतंकवादी बन जाते हैं। थोड़ा सा किसी ने नुकसान पहुँचाया और हम संकल्प करके उसकी हत्या कर देते हैं तो हमें भी जेल हो जाती है, फाँसी हो जाती है और पूरा परिवार दुखी हो जाता है। इस तरह यह हिंसा पाप है, अपराध है, बुरी है - ऐसा जानकर इसका त्याग कर देना चाहिए।

2. सभी किसी न किसी प्रकार का उद्योग करते हैं, व्यापार करते हैं, दुकान करते समय सामान लाने-ले जाने, उठाने-रखने आदि के कार्य करते समय सावधानी रखते हुए भी बहुत से छोटे-मोटे जीव जन्तुओं की हिंसा हो जाती है, उसे उद्योगी हिंसा कहते हैं। ध्यान रखना! हिंसा का उद्योग नहीं करना है, लेकिन उद्योग करते हुए जो हिंसा हो जाती है, उसे उद्योगी हिंसा कहा है।

3. जब घर में साफ-सफाई करते, कपड़े धोते, भोजन बनाते, बर्तन साफ करते समय सावधानी रखते हुए भी हिंसा हो जाती है वह आरम्भी हिंसा अर्थात् घर-गृहस्थी के कार्य संबंधी हिंसा कहलाती है। घर में जीवों को मारने का भाव या क्रिया नहीं करनी है; लेकिन घर के काम करते समय सावधानी रखते हुए भी जो हिंसा हो जाती है उसे आरम्भी हिंसा कहते हैं।

4. जब कोई हमारे देश, समाज, परिवार, धर्म या स्वयं के ऊपर आक्रमण करके नुकसान पहुँचाना चाहता है तब हम देश-परिवार-धर्म या अपनी सुरक्षा के लिए जो कुछ भी उपाय करते हैं, उनको करते हुए किसी की हिंसा हो जाती है तो वह विरोधी हिंसा कहलाती है ।

विरोधियों की हिंसा करना विरोधी हिंसा नहीं है वह तो संकल्पी हिंसा है और अपनी सुरक्षा के लिए सावधानी रखते हुए जो उपाय करते हैं, उस समय किसी की हिंसा हो जाती है तो वह विरोधी हिंसा कहलाती है।

हमारी भारतीय न्याय व्यवस्था भी इन सभी दृष्टिकोणों के आधार से ही किसी को सजा देती है। किसी डॉक्टर के हाथ से इलाज करते समय यदि मरीज की मृत्यु हो जाती है तो उसे वह सजा नहीं दी जाती जो किसी के द्वारा गोली चलाए जाने पर हिंसा होने पर दी जाती है; क्योंकि गोली चलाने वाले हत्यारे और डॉक्टर के विचारों/भावों में अन्तर है। इसी तरह देश पर आक्रमण करने वाले या देश में आतंक फैलाने वाले आतंकवादी/उग्रवादी कहलाते हैं जबकि जो पुलिस या सेना के सिपाही अपने देश-समाज की रक्षा करते हुए किसी पर गोली चलाते हैं तो वे वीर कहलाते हैं, उन्हें पुरस्कार दिया जाता है।

इस तरह हमें हिंसा के प्रकारों को समझ कर अपने जीवन में जितना संभव हो अहिंसक आचरण करना चाहिए।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 - रेखांकित शब्द को सुधार करके पुनः लिखें।

1. कुडमलई में अतिवरण नाम का ग्वाला रहता था।
2. ग्वाला अत्यन्त निर्दयी और आलसी व्यक्ति था।
3. वह गायों का कठारेता से पालन करता था।
4. शास्त्रदान करते हुए उसका हृदय विशाद से आपूर्ण था।

प्रश्न 2 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. दावाग्नि के बीच एक वृक्ष क्यों हरा था?
2. ग्वाले ने शास्त्र को किसे भेंट किया?
3. हिंसा किसे कहते हैं?
4. योजनाबद्ध तरीके से किसी को मारना कौनसी हिंसा है?

प्रश्न 3 – मूल्य परक प्रश्न –

ग्वाला शास्त्रदान और शास्त्र विनय के फल में महान आचार्य बना, हम भी रोज किसी न किसी की विनय करते हैं, सूची बनाइए आप किस-किसकी रोज विनय करते हैं?

प्रश्न 4 – उचित विकल्प चुनो।

1. श्रेष्ठ धर्म कहा है –

   (क) हिंसा ☐ (ख) अहिंसा ☐ (ग) चोरी ☐

2. उग्रवादी और आतंकवादी किस हिंसा में बनते हैं?

   (क) विरोधी ☐ (ख) आरम्भी ☐ (ग) संकल्पी ☐

3. झाडू-पोंछा लगाते हुए जीव-जन्तुओं का मर जाना हिंसा है।

   (क) उद्योगी ☐ (ख) आरम्भी ☐ (ग) विरोधी ☐

4. हमें कैसा आचरण करना चाहिए।

   (क) अहिंसक ☐ (ख) हिंसक ☐ (ग) लोभयुक्त ☐

प्रश्न 5 – रचनात्मक कोना –

1. हिंसा के चारों प्रकारों में से जो भी अच्छा लगे उस पर अपने विचार लिखें।
2. हिंसक प्रवृत्ति या आचरण से होनी वाली हानियों को लिखें।
3. हिंसा के चारों प्रकारों को समझाने के लिए अपने आसपास कभी घटित-घटना को अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करें।

12 सुभाषित : दया

दयामूलो भवेद् धर्मो, दया प्राण्यनुकंपनम्।
दयायाः परिरक्षार्थं, गुणाः शेषाः प्रकीर्तिताः।।

धर्म दयामूलक है, प्राणियों की अनुकंपा को दया कहते हैं, दया की रक्षा के लिए ही शेष गुण कहे गए हैं।

यस्य जीवदया नास्ति, तस्य सच्चरितं कुतः।
न हि भूतद्रुहां कापि, क्रिया श्रेयस्करी भवेत्।।

जिसके जीव दया नहीं है, उसके सम्यक् चारित्र कैसे हो सकता है? क्योंकि जीव द्रोही लोगों की कोई क्रिया कल्याणकारिणी नहीं होती।

सर्वं दानं कृतं तेन, सर्वे यज्ञाश्च भारत!
सर्वतीर्थाभिषेकाश्च, यः कुर्यात् प्राणिनां दयाम्।।

हे अर्जुन! जो प्राणियों पर दया करता है, उसने सब दान कर लिए, सब यज्ञ कर लिए और सब तीर्थों में स्नान कर लिया।

बालेषु वृद्धेषु च दुर्बलेषु, भ्रष्टाधिकारेषु निराश्रयेषु।
रोगाभियुक्तेषु जनेषु लोके, येषां कृपा नास्ति न ते मनुष्याः।।

जगत में बालकों, वृद्धों, दुर्बलों, अधिकार से भ्रष्टों, आश्रयहीनों और रोगीजनों पर जिन्हें दया नहीं आती, वह मनुष्य नहीं है।

दयामूलो भवेद् धर्मः, परे सत्यव्रतादयः।
सद्गुणाः कीर्तिताः सर्वे, केवलं सद् दयाप्तये।।

धर्म दयामूलक है, अन्य जो सत्यव्रत आदिक समीचीन गुण कहे गए हैं, वे सिर्फ उत्तम दया की प्राप्ति के लिए कहे गये हैं।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर –

1. दयामूलक क्या है?
2. सम्यक्चारित्र किसे नहीं हो सकता है?
3. मनुष्य कौन नहीं है?
4. सत्यव्रत आदि गुण किसकी प्राप्ति के लिए कहे हैं?
5. 'सर्वं दानं कृतं' श्लोक – किससे कहा है?

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. न हि .... भवेत्।
2. सर्व दानं .... भारत।
3. बालेषु .... निराश्रयेषु।
4. सद्गुणाः .... दयाप्तये।

प्यारे बच्चो !!

आप अपने प्यारे–प्यारे जन्मदिन पर –

- अपने निर्दोष परमात्मा/इष्टदेव का दर्शन/स्मरण करो।
- अपने दादा–दादी, नाना नानी, माता–पिता और अन्य बड़े जनों का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करो।
- विद्यालय में गुरुजनों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करो।
- अपने मित्रों के बीच फल, नारियल चटक, मिश्री वितरण करके शुभकामनाएँ प्राप्त करो।
- मन्दिर में दान करो।
- बालक–बालिकाओं को कॉपी–पेन आदि उपहार में देकर शुभकामनाएँ प्राप्त करो।

जन्मदिन के अवसर पर –

- मोमबत्ती जलाकर बुझाने का काम मत करो।
- बाजार में बने हुए केमिकल युक्त नुकसानदायक केक काटकर खाना–खिलाना मत करो।
- माता–पिता पर दबाव डालकर उपहार लेना, पैसा माँग कर मित्रों के बीच तन–मन–धन बिगाड़ने वाली पार्टी आदि मत करो।

आपके जन्मदिन के अवसर पर 'धरोहर' परिवार की मंगल शुभकामनाएँ हैं कि आप अपनी भारतीय संस्कृति रूप धरोहर को अच्छी तरह संभालें।

आपका जीवन मंगलमय होगा।

अनुशासन के सूत्र

- प्रत्येक कार्य समय पर करना चाहिए।
- प्रत्येक वस्तु को नियत स्थान पर रखना चाहिए।
- गुरुजनों को ज्ञात कराये बिना, कोई नवीन कार्य न करना चाहिए।
- भूल को सहजता से स्वीकार करना चाहिए।
- अपने लक्ष्य को प्रतिदिन दोहराना चाहिए।
- गुरुजनों के वचनों का आदर करते हुए अपने वचनों का निर्वाह करना चाहिए।

धरोहर